न्यू मीडिया और हिन्दी साहित्य : वर्तमान स्थिति

अतुल वैभव
पी.एच.डी, शोधार्थी
दिल्ली विश्वविद्यालय-नई दिल्ली-07

Abstract (शोध सारांश)

वर्तमान दौर मीडिया के नये स्वरूप 'न्यू मीडिया' का है। मीडिया का आधुनिक स्वरूप जिसमें सोशल मीडिया के विविध नये रूप/माध्यम शामिल हैं, जिसे सोशल मीडिया जनित मीडिया के नये-नये माध्यम अर्थात् न्यू मीडिया कहते हैं। समय के साथ हुए तकनीकी बदलाव और विकास ने सूचना क्षेत्र में क्रांति लाने का कार्य किया है। अखबार और पत्रिकाओं से आगे अब मीडिया में इलेक्ट्रॉनिक और डिजिटल मीडिया के सारे माध्यम भी आते हैं, जहां कोई भी पाठक, श्रोता और दर्शक सूचनाओं का आदान-प्रदान बिना किसी शुल्क या दबाव के कर सकता है। साथ ही प्रत्यक्ष रूप से अपनी सहभागिता भी प्रस्तुत करता/कर सकता है। सोशल मीडिया ने मीडिया को और भी लोकतांत्रिक बनाया है, जहां हर कोई खुद को जिस रूप में चाहे अभिव्यक्त कर सकता है। आज अभिव्यक्ति का सर्वाधिक लोकतांत्रिक और लोकप्रिय माध्यम मीडिया का नया रूप न्यू मीडिया ही है। सोशल मीडिया का कोई भी उपयोगकर्ता जब चाहे, जहां चाहे और जिस रूप में भी चाहे खुद को अभिव्यक्त कर सकता है। न्यू मीडिया के दर्जनों ऐसे माध्यम हैं जहां व्यक्ति किसी भी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक या फिर साहित्यिक विषयों पर अपने विचार व्यक्त कर सकता है। किसी भी सामाजिक मुद्दे पर आज पलक झपकते सोशल मीडिया पर प्रतिक्रियाओं की झड़ी लग जाती है। हर कोई अपने अनुसार किसी भी घटना, मुद्दे या विमर्श पर प्रतिक्रिया देने लगता है। ऐसी कोई भी घटना जिससे समाज का बड़ा तबका प्रभावित हो रहा होता है, उस घटना विषय पर लोग कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना तथा साहित्य की अन्य विधाओं के द्वारा अपनी आवाज दुनिया के समक्ष प्रस्तुत करने लगते हैं। साहित्य की विविध विधाओं का लेखन आज सोशल मीडिया पर बहुतायत किया जा रहा है। एक प्रकार से देखा जाए तो मीडिया के नये-नये माध्यमों ने साहित्य लेखन, पाठन और प्रकाशन को बहुत ही आसान बना दिया है साथ ही साहित्यिक भाषा, शैली और संवेदना को भी प्रभावित किया है या फिर कह सकते हैं कि नुकसान किया है। न्यू मीडिया ने हिन्दी साहित्य को नया स्वरूप दिया है।

Keywords (मुख्य शब्द): *न्यू मीडिया, सोशल मीडिया, साहित्य, डिजिटल मीडिया, डिजिटल साहित्य, सोशल नेटवर्किंग साइट*

भूमिका (Introduction)

वर्त्तमान समाज पत्रकारिता के नये युग में जी रहा है। विज्ञान जनित तकनीक ने पत्रकारिता के परंपरागत स्वरूप को व्यापक रूप में बदला है। आज की पत्रकारिता अखबार, पत्रिका, रेडियो, टेलीविज़न की पत्रकारिता तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसका स्वरूप बृहत हो चुका है। जिस पत्रकारिता की शुरुआत मुद्रण तकनीक के आविष्कार से अठारहवीं सदी में हुई थी आज इक्कीसवीं सदी में उसका स्वरूप और मिज़ाज दोनों बदल चुका है। अठारहवीं सदी की पत्रकारिता आज इक्कीसवीं सदी में नयी पत्रकारिता अर्थात् 'न्यू मीडिया' का रूप ले चुकी है। न्यू मीडिया अर्थात् नया मीडिया जो कि पत्रकारिता का नया रूप है। आज इस तकनीकी युग में पत्रकारिता शब्द मीडिया और न्यू मीडिया का रूप ले चुका है। कल तक जिसे पत्रकारिता कहा जाता था आज वह न्यू मीडिया हो चुका है। "मानव विकास के साथ-साथ संचार के रूपों, प्रारूपों, साधनों, उपकरणों,

माध्यमों, तरीकों आदि का भी विकास होता आया है। डिजिटल मीडिया और इसके ही एक प्रारूप सोशल मीडिया को संचार के अत्याधुनिक माध्यम के तौर पर जाना जाता है।"[i] तकनीकी विकास के फलस्वरूप संचार क्षेत्र में जिन नये माध्यमों का विकास तथा विस्तार हुआ है आज उसे ही न्यू मीडिया की संज्ञा दी जाती है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि पत्रकारिता का नया रुप जिसमें जनसंचार होता है, उसी के नए रूप को न्यू मीडिया कहा जाता है। तकनीकी भाषा में कहें तो कंप्यूटर एवं इंटरनेट से संचालित मीडिया को न्यू मीडिया माना जाता है। "न्यू मीडिया का आशय ऐसे मीडिया रूप से है, जिसमें अखबार, आलेख, ब्लॉग्स से लेकर संगीत और पॉडकास्ट जैसे मीडिया रूप जिसे डिजिटल मध्यम से प्रयोग में लाया जाता है। जनसंचार का ऐसा माध्यम जिसमें वेबसाइट व ईमेल से लेकर, मोबाईल और एप्प के माध्यम से प्रयोग में लाया जाने वाला कोई भी इंटरनेट आधारित जनसंचार माध्यम न्यू मीडिया के अंतर्गत आता है।"[ii] न्यू मीडिया का आशय वेब पत्रकारिता से है जहां सामाजिक मीडिया अर्थात् सोशल मीडिया का महत्व एवं वर्चस्व है। सामाजिक मीडिया का आधार इंटरनेट है। इंटरनेट ने वर्तमान पत्रकारिता को नया रूप तो दिया ही है साथ ही आज मीडिया के दर्जनों नए माध्यमों को भी जन्म दिया है। जिस पत्रकारिता की शुरुआत अठारहवीं सदी में कागज, इंक और टाइपराइटर से हुई थी आज वह बिना इंक और वास्तविक कागज़ के कंप्यूटर और इंटरनेट के माध्यम से हो रही है। "आज जनसंचार-माध्यमों में विशेषकर प्रसारण व संचार-माध्यम एक नई विश्व-क्रान्ति का स्वरूप प्रस्तुत कर रहे हैं। श्रव्य व दृश्य एवं संप्रेषण और पत्रकारिता से आगे बढ़कर ये प्रचार-प्रसार कंप्यूटर से इंटरनेट तक विस्तृत हो चुका है।"[iii] आज इस वैज्ञानिक युग में तकनीकी तरक्की मानव जीवन का चहुंमुखी विकास कर रहा है। वर्तमान दौर में जीवन के सभी क्षेत्रों में तकनीक का दखल होता जा रहा है।

वर्तमान सदी विज्ञान, नई तकनीक और इंटरनेट की सदी है। विज्ञान ने कंप्यूटर, लैप टॉप, मोबाइल, टैब आदि न जाने ऐसे कितने अनगिनत तकनीक हम मानव समाज को दिये हैं जिनका प्रयोग हम अपने जीवन को आसान बनाने के लिए कर रहे हैं। आज सभी तकनीकों का जुड़ाव कहीं न कहीं उस अंतरजाल से है, जिसे हम इंटरनेट के नाम से जानते हैं। "पिछले दो दशकों से इंटरनेट ने हमारी जीवनशैली को बदलकर रख दिया है। एक नये आभासी समाज और समुदाय का निरंतर निर्माण भी हो रहा है। हमारी जरुरतें, कार्य प्रणालियाँ, अभिरुचियाँ और यहाँ तक कि हमारे सामाजिक मेल-मिलाप और संबंधों के ताने-बाने को रचने में कंप्यूटर और इंटरनेट ही बहुद हद तक जिम्मेदार है।"[iv] आज जब भी हम इंटरनेट की बात करते हैं तो जाहिर तौर पर जनसंचार के ऊन सभी साधनों की बात भी करते हैं जो इंटरनेट जनित और संबंधित हैं। पिछले बीस बर्षों में तकनीक का फैलाव पूरी दुनिया के साथ-साथ भारत में भी काफी तेजी से हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में मोबाइल फोन आ गया है। आज मोबाइल मानव समुदाय के लिए महत्वपूर्ण जीवनानुपयोगी वस्तु बन गया है। मोबाइल और इंटरनेट ने सूचना संचार क्षेत्र में एक प्रकार से क्रांति लाने का कार्य किया है। "हम अपने आसपास के अनुभवों से जानते भी हैं कि इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ से ही जीवन का कोई भी ऐसा पहलू बाकी नहीं रह गया है, जिसको सूचना-संचार प्रौद्दोगिकियों ने स्पर्श न किया हो।"[v] आज समाज का पढ़ा-लिखा प्रत्येक वर्ग अपने 'स्मार्ट फोन' के माध्यम से सूचना प्रौद्दोगिकी के नए माध्यमों से निरंतर जुड़ा रहता है। आज के इस सूचना प्रौद्दोगिकी रूपी विकसित होते समाज में मोबाइल फोन लोगों के जीवन की जरूरत बन चुका है। अब तो जीवित रहने के लिए मूलभूत तत्व अन्न, पानी और हवा के साथ-साथ मोबाइल भी अति महत्वपूर्ण हो चुका है। आज का मोबाइल फोन मोबाइल वॉलेट, मोबाइल मनी, मोबाइल बैंक, मोबाइल शॉपिंग, मोबाइल पत्र-पत्रिकाएँ, मोबाइल लाइब्रेरी और मोजो अर्थात् मोबाइल जर्नलिज्म के रूप में हमारे सामने है। (आज किताब, अखबार, पत्रिका, टीवी, रेडियो, सिनेमा हॉल, बैंक, एटीएम सब एक मोबाइल में ही समाहित है।) आज मोबाइल और इंटरनेट ने कैश लेस अर्थव्यवस्था और समाज की अवधारणा को मजबूती प्रदान की है। मोबाइल का उपयोग बात करने से कहीं अधिक अन्य जीवनोपयोगी कार्यों और साधनों में होने लगा है। आज मोबाइल मीडिया के नए माध्यमों के लिए उपयोग में लाया जा रहा है। सोशल मीडिया के ऐसे दर्जनों साधन फेसबुक, ट्विटर, वाट्सएप्प, इंस्टाग्रम, लिंक्ड-इन, मैसेंजर, यूट्यूब जैसे सोशल वेबसाइट्स आज युवाओं के लिए एक ऐसे माध्यम हैं, जहाँ उन्हें मजबूती से अपनी बात रखने का अवसर मिल रहा है साथ ही आज का सोशल मीडिया

मुख्यधारा के मीडिया को मजबूती भी प्रदान कर रहा है। सोशल मीडिया के इन साधनों ने आज मीडिया के परंपरागत स्वरूप को बिलकुल ही बदल दिया है।

सोशल मीडिया, मीडिया का विकसित और संवर्धित अगला चरण/स्वरूप है। प्रत्येक तकनीक की अपनी सीमाएँ भी होती हैं। मीडिया की भी अपनी सीमाएँ रही हैं। मीडिया में संवाद एकतरफा होता है, वहाँ सूचनाएँ सिर्फ आती हैं, जाती नहीं हैं। वहाँ संवाद एकतरफा होता है और इसी एकतरफे संवाद परंपरा को सोशल मीडिया ने तोड़ा है और अब वहाँ संवाद का आदान-प्रदान होता है। आज हर वह व्यक्ति लेखक बन गया है या बन सकता है जिसमें लिखने का जुनून है और उसके जुनून को सोशल मीडिया दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह सिर्फ लिखने की ही आजादी नहीं देता है बल्कि व्यक्ति को सम्पूर्ण अभिव्यक्ति की आजादी भी देता है। आज सोशल मीडिया अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन चुका है। सोशल मीडिया की खासियत ही है कि यहाँ हर पाठक लेखक और हर लेखक पाठक है। यहाँ मुख्य धारा की मीडिया की तरह एकतरफा संवाद नहीं होता। यहाँ हर क्रिया के प्रति विपरीत प्रतिक्रिया होती है अर्थात् हर लेखन पर क्षण भर में ही प्रतिक्रियाओं का ताँता लग जाता है। "सोशल मीडिया सिर्फ संचार नहीं है, यह संवादात्मक संचार है। इसमें उपयोगकर्ता को कई प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं। उपयोगकर्ता न सिर्फ सुचनाएँ, विचार व अभिरुचियाँ ही, वरन अपनी प्रतिक्रियाएँ, टिप्पणियाँ आदि भी फोटो, वीडियो और संकेत-चिन्हों के माध्यम से प्रेषित कर सकता है।"[vi] सोशल मीडिया ने सभी को पत्रकार, लेखक, आलोचक और कवि बनने का एहसास करवाया है। सोशल मीडिया आज इंसान के जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। उसके बिना अब इंसान खुद को अपंग, असहाय और अधूरा महसूस करने लगता है जिसे इसकी आदत पड़ जाती है। आज विद्यार्थी हो या क्षिक्षक या फिर लेखक या साहित्यकार सभी सोशल मीडिया से जुड़े हैं और सोशल मीडिया इनकी जरूरत भी बन चुका है।

पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है और साहित्य को समाज का दर्पण। आज का सोशल मीडिया पत्रकारिता और साहित्य दोनों को ही विस्तार देने में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। तकनीकी विकास ने जिस गति से मीडिया के स्वरूप को बदला है उसी गति से हिन्दी साहित्य के आंतरिक तथा बाह्य स्वरूप को भी। "न्यू मीडिया में समकालीन हिन्दी साहित्य की पहुँच विश्व के हर उस हिस्से तक हो गई है जहां पर इंटरनेट के माध्यम से हिन्दी साहित्य का सृजनकर्ता साहित्यकार या पाठक मौजूद है और यही कारण है कि समकालीन हिन्दी साहित्य विश्व के तमाम देशों में लिखा जा रहा है।"[vii] आज न्यू मीडिया के द्वारा हिन्दी साहित्य का विस्तार दुनिया भर में हो रहा है। इंटरनेट के अनेक माध्यमों पर हिन्दी साहित्य लेखन वैश्विक स्वरूप ले रहा है। इंटरनेट पर साहित्यिक पत्रिकाएँ, अनेक वेब पोर्टल तथा अनेक वेबसाइट्स हैं जहां हिन्दी साहित्य लेखन हो रहा है। दुनिया के भिन्न-भिन्न देशों से हिन्दी साहित्यिक पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है। आज साहित्य अपने परंपरागत स्वरूप के साथ-साथ अपने नये स्वरूप वर्चुअल/इंटरनेट रूप में भी है। आज साहित्य प्रेमी फेसबुक, यूट्यूब, गूगल, व्हाट्सएप्प, ब्लॉग्स, वेवसाइट्स जैसे न्यू मीडिया के अनगिनत माध्यमों पर हिंदी साहित्य से संबंधित बने समूहों से जुड़ कर हिंदी साहित्य लेखन से रूबरू होते हैं। "वेबसाइट्स और सोशल मीडिया समूहों की संख्या और उनके सदस्यों की संख्या से ही इस बात का अंदाजा लगाया जा सकता है कि न्यू मीडिया के माध्यम से समकालीन साहित्य की पहुँच का कितना अधिक विस्तार हो रहा है।"[viii] साहित्य पढ़ना, लिखना और मुद्रण तीनों को वर्तमान में सोशल मीडिया ने विस्तार देने का कार्य किया है।

आज न्यू मीडिया के इस वर्तमान दौर में हिंदी साहित्य की पहुँच साहित्य प्रेमी तक पहले से कहीं सुगम हुआ है। न्यू मीडिया के दौर में साहित्य का पाठ ही नहीं बल्कि, उसका ऑडियो और वीडियो सामग्री का निर्माण भी किया जा रहा तथा उसे एक बड़े पाठक के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। विज्ञान के इस युग में तकनीकी प्रौद्दोगिकी तथा पेशेवर शिक्षा को बढ़ावा दिया जा रहा है, तब साहित्य का महत्व शिक्षा जगत में कहीं न कहीं सीमित होता जा रहा है। साथ ही उसका असर आज समाज में

अनैतिकता और अराजकता का भी कारण बनता जा रहा है। आज युवाओं का बड़ा वर्ग साहित्य से दुर हो रहा है और न्यू मीडिया के माध्यमों में खुद को उलझाए रखता है। आज जनसंचार के दर्जनों माध्यम युवाओं के मनोरंजन के लिए उपलब्ध हैं। टेलीविज़न धारावाहिक, सिनेमा, ओटीटी प्लेटफॉर्म जैसे मनोरंजन के साधन आज युवाओं के एक क्लिक पर मोबाइल में उपलब्ध हैं। अब जब युवा अपने दैनिक जीवन का बड़ा हिस्सा जनसंचार माध्यमों को दे रहा है तब जाहिर सी बात है कि वह साहित्य पढ़ने के लिए समय कहाँ से देगा? "युवा वर्ग आज इंटरनेट के माध्यम से कुछ भी जानकारी प्रकट करने में सक्षम है किंतु शायद ही इनमें से कुछ युवा होंगे जो साहित्यिक पत्रिकाओं अथवा अन्य रचनात्मक लेखों को पढ़ते हों। इसका मुख्य कारण कहीं ना कहीं साहित्य को लेकर हमारी उपेक्षा ही है। आज विद्यार्थी वर्ग में तकनीकी विषयों के प्रति बढ़ते रुझान को देख एक भेड़ चाल का जाल बुना जा चुका है जहां मानविकी विषयों खास तौर पर साहित्य को अवर समझा जाता है।"[ix]

वर्तमान सूचना तकनीक के नए युग के पहले साहित्य का स्वरूप किताबों और पत्र-पत्रिकाओं तक ही सीमित था, परंतु आज साहित्य किताबों और पत्र-पत्रिकाओं से आगे न्यू मीडिया के अनगिनत साधनों पर भी उपलब्ध हैं। न्यू मीडिया के साहित्य को कल तक साहित्य की कोटी में नहीं माना जाता था परंतु आज यह साहित्य ही नहीं है बल्कि साहित्य का अभिन्न हिस्सा है। "साहित्य वह भी है जो पुस्तकाकार है और विभिन्न विधा रूपों में रचा गया है। साहित्य वह भी है जो विभिन्न माध्यमों के लिए लिखा गया है।"[x] न्यू मीडिया के अनेक ऐसे माध्यम हैं जहां गंभीर साहित्य लेखन हो रहा है। अब साहित्य सिर्फ प्रकाशन संस्थान और पुस्तकों तक ही सीमित नहीं है। 21वीं सदी का साहित्य पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों से निकल कर इंटरनेट पर पहुँच बना चुका है। आज फेसबुक, व्हाट्सएप्प, ब्लॉग, वेब पेज, यूट्यूब और अनगिनत साहित्यिक ई-पत्रिकाओं के माध्यम से साहित्य नये रूप में अवतरित हुआ है। समय के साथ विज्ञान जनित नये-नये तकनीकों ने मानव जाति को समृद्ध किया है। समाज को भी समयानुसार उन तकनीकों के साथ ताल-मेल बैठाना पड़ता है। आज नए तकनीकों के साथ ताल-मेल बैठाकर सोशल मीडिया का प्रयोगकर्ता साहित्य को आगे बढ़ा रहा है। सोशल मीडिया से वही जुड़ सकता है, जिसके पास मोबाइल (स्मार्ट फोन), लैपटॉप, कम्प्यूटर या टैब जैसे उपकरण होंगे। एक प्रकार से इंटरनेट के बिना सोशल मीडिया तक पहुँचना असंभव है। सोशल मीडिया ने एक प्रकार से साहित्य को एक नया पाठक वर्ग और लेखक वर्ग दिया है। आज साहित्य के विविध विधाओं का विकास सोशल मीडिया के अनेक स्वरूपों के माध्यम से हो रहा है। टीवी, रेडियो, अखबार, पत्रिका और सिनेमा सब एक क्लिक पर इंटरनेट के माध्यम से स्मार्ट मोबाइल फोन में उपलब्ध है। आज सूचनाओं के बहते तेज धारा में हर कोई तैर सकता है, जिसके पास इंटरनेट रूपी लाइफ जैकेट है। जिस प्रकार आधुनिक मीडिया ने खबरों की परिभाषा को बदला है, उसी प्रकार न्यू मीडिया/सोशल मीडिया के विभिन्न साधनों ने साहित्य लेखन और उसके स्वरूप को बदल दिया है।

साहित्य को आज सोशल मीडिया के भिन्न-भिन्न उपकरण बहुत ही सुचारु रूप से चला रहे हैं। इन्हीं उपकरणों में एक प्रमुख उपकरण है- 'ब्लॉग'। यहाँ उपकरण इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि ये सभी इंटरनेट से जुड़े हुए हैं और इंटरनेट एक विशालकाय मशीन की तरह है जिसका कोई छोड़ या अंत नहीं दिखता है। ब्लॉग एक प्रकार से वह किताब है जो हर दिन लिखी जाती है अर्थात् प्रतिदिन उसमें कुछ जोड़ या घटा सकने की गुंजाइश रहती है। कोई भी जब चाहे, जो चाहे और जितना चाहे लिख सकता है। न शब्द सीमा और न ही प्रकाशन के खर्च की परेशानी। ब्लॉग उन नव लेखकों के लिए एक वर्दान है जो लिखना तो खूब चाहते हैं परंतु उनको लिखने के लिए कोई माध्यम नहीं मिल पाता है। ब्लॉग ने मौलिक लेखन को बढ़ावा दिया है साथ ही आलोचना और आलोचक को मंच प्रदान किया है। मीडिया के नये रूप ने एक प्रकार से आज अनगिनत विमर्शों को जन्म दिया है साथ ही अनेक विमर्शों को मुखर बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वर्तमान में लघु कविता, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, यात्रावृत, समीक्षा आदि साहित्यिक विधाओं का न्यू मीडिया जगत में महत्वपूर्ण स्थान है। आज साहित्य की सभी विधाओं के ऊपर अलग-अलग अनगिनत ब्लॉगर और ब्लॉग हैं जो साहित्य को नई दिशा दे रहे हैं। ब्लॉग लेखन आज साहित्य जगत में चर्चा का विषय बना हुआ है। कुछ प्रमुख साहित्यिक ब्लॉग हैं- हिन्दी चिट्ठाजगत, जानकी पुल, बूंद-बूंद इतिहास, साहित्यमंजरी, हमारी आवाज, हमकलम, संवादी, नया जमाना, मेरी जुबानी, रचनाकार आदि। इसी प्रकार कुछ

ब्लॉग लेखकों और साहित्यकारों के अपने नाम से ब्लॉग हैं। जैसे- उदय प्रकाश, कुमार अंबुज, अजदक आदि। आज ब्लॉग की प्रासंगिकता इसी से जान पड़ती है कि समीरलाल समीर को 'सर्वश्रेष्ठ उदीयमान ब्लॉगर' का पुरस्कार मिला है। आज ब्लॉग से संबंधित लेखन के लिए इंडी ब्लॉगर सम्मान दिया जा रहा है। आज ब्लॉग अपने आप में साहित्य की एक विधा के रूप में आने लगा है। दिल्ली विश्वविद्यालय में ब्लॉग को लेकर पी.एच.डी. शोध कार्य किया जा रहा है। ब्लॉग साहित्य को विस्तार देने के साथ-साथ साहित्य संग्रह करने का बेहतरीन प्लेटफॉर्म भी है।

आज इंटरनेट पर आइ.एस.एस.एन.पत्रिकाएँ बहुतायत प्रकाशित हो रही हैं जिनमें से अनगिनत उत्कृष्ट ई-पत्रिकाएँ भी हैं। नये-नये रचनाकारों का उदय हो रहा है तथा नये-नये युवा संपादक, उप-संपादक, पत्रकार, समीक्षक बन रहे हैं। इसी प्रकार आज अलग-अलग साहित्यिक विधाओं से संबंधित दर्जनों वेव पेज हैं जहां साहित्यिक विधा विशेष से संबंधित लेखन हो रहा है। कविता कोश, कहानी डॉट कॉम, साहित्यिक विमर्श, लघुकथा.कॉम, हिन्दी नेस्ट डॉट कॉम, साहित्य शैली जैसे पेज और अनगिनत साहित्यिक ई-पत्रिकाएँ साहित्य के पाठक और लेखक दोनों के लिए उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। आज हिन्दी की प्रमुख साहित्यिक पत्रिकाओं का ई-संस्करण भी प्रकाशित हो रहा है। शोध संचय, अनुसंधान, जनकृति, शोध संदर्भ, शोध धारा के अलावे अनगिनत पत्रिकाएँ हैं जो सिर्फ ऑनलाइन ही प्रकाशित होती हैं, तो अनेक पत्रिकाएँ ऐसी हैं जो ऑफलाइन और ऑनलाइन दोनों रूपों में प्रकाशित हो रही हैं। आलोचना, हंस, आजकल, बहुवचन, वागर्थ आदि पत्रिकाएँ प्रमुख हैं। आज सोशल मीडिया लेखक, आलोचक और कवि के साथ-साथ साहित्य को आभासी रूप भी प्रदान कर रहा है। आज सिर्फ युवा ही सोशल मीडिया पर नहीं लिख रहे हैं, बल्कि बड़े-बड़े स्थापित साहित्यकार, पत्रकार और लेखक भी सोशल मीडिया पर अपना अलग पेज बनाकर अपने पाठक से निरंतर जुड़े रहते हैं। आज साहित्य का पाठक उनकी रचनाओं की प्रतिक्रिया स्वरूप मूल्यांकन भी कमेन्ट के रूप में कर रहा है। "इसमें हंथों हांथ अच्छी और बुरी प्रतिक्रियाएँ सामने आ जाती हैं।"[xi] किसी की भी लेखनी अगर पसंद होती है तो उसे पल भर में फॉरवर्ड और शेयर करते हैं।

आज फेसबुक उस डायरी की तरह है जो लेखक के द्वारा जब चाहे, जो चाहे, जहां चाहे खुद लिखी जाती है। कोई इसे प्रतिदिन लिखता है तो कोई सप्ताह में एक दिन तो कोई महीने में एक-दो दिन परंतु लिखते सभी हैं। फेसबुक का स्टेटस अपडेट लगभग सभी फेसबुक यूजर की अपनी खुद की अभिव्यक्ति होती है। आज सोशल मीडिया का अधिकांश उपयोगकर्ता अपने जीवन से जुड़ी घटनाओं का जिक्र फेसबुक पर लिख कर करता है। आज फेसबुक, व्हाट्सएप्प, ट्विटर जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर पोस्ट, स्टेटस या ट्वीट खुद की अभिव्यक्ति होती है। जो लिख नहीं सकता है वो खुद का फोटो शेयर कर के अपने फेसबुक मित्र को वह सब बता देता है जो वह लिख के नहीं बता सकता। फेसबुक आज समकालीन साहित्य की सभी विधाओं को एक मंच प्रदान कर रहा है। आज का साहित्य प्रेमी फेसबुक के माध्यम से अपनी जीवनी, आत्मकथा, यात्रा-वृतांत, डायरी लेखन कर अपनी अभिव्यक्ति को मजबूती दे रहा है। आज साहित्य प्रेमी फेसबुक पर लेखक से बात (चैट) करते हुए एक प्रकार से उनका इंटरव्यू लेते हैं। आज हम फेसबुक पर प्रतिदिन नये-नये विषयों और विचार से अवगत होते हैं। फेसबुक सम्पूर्ण मौलिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। अभिव्यक्ति के इस खुले मंच पर आज के नये-नये पाठक को भी अपना मत रखने का मौका मिल रहा है। फेसबुक पर साहित्य से संबंधित अनगिनत ऐसे पेज हैं जिनको लाइक कर के पाठक साहित्यिक गतिविधियों से निरंतर अप टू डेट रह सकता है।

वर्तमान साहित्य लेखन में तात्कालिकता का प्रभाव ज्यादा है। ट्विटर जैसे माध्यम ने लेखन की शैली को गठीला बनाया है तो वहीं ब्लॉग ने लेखन में प्रौढ़ता भी लाने का कार्या किया है। ट्विटर पर जहां पहले 140 कैरेक्टर्स में अपने विचार प्रकट करते थे तो वहीं अब शब्द सीमा दोगुनी हो जाने से उसकी प्रासंगिकता और अधिक बढ़ गयी है। ट्विटर सोशल मीडिया का एक ऐसा रूप है जहां आप कभी भी अपने मन की बात ट्वीट कर सकते हैं। री-ट्वीट, लाइक, कमेन्ट से उस ट्वीट की पुष्टि होती है कि उस बात से कितने लोग सहमत और कितने असहमत हैं। किसी भी विषय पर आप अपनी राय, अपने विचार अपने

फॉलोअर के सामने रख सकते हैं। अपनी स्वतंत्र अभिव्यक्ति सब के सामने रखने का एक खुला चिट्ठा है। आप किसी भी विषय पर अपनी क्या राय रखते हैं यह सब ट्वीट से पता चल जाता है! आज किसी भी व्यक्ति, संस्था या सत्ता की आलोचना हर कोई सोशल मीडिया पर कर सकता है। सोशल मीडिया के दौर में आज आलोचना पहले से अधिक मुखर हुई है। आज अनेक विमर्शों को सोशल मीडिया ने जन्म दिया है। अब सोशल मीडिया साहित्य की व्यापकता और विस्तार के लिए बहुत ही उपयोगी और महत्वपूर्ण होता जा रहा है। गूगल आज ज्ञान का महासागर है, जिसमें इंटरनेट यूजर ज्ञान के लिए उसी प्रकार गोता लगाता रहता है जिस प्रकार मछली अपने भोजन के लिए पूरे महासागर में विचरण करती रहती है। आज गूगल रूपी महासागर में फेसबुक, ट्विटर और यू ट्यूब आदि जैसी ना जाने कितनी नदियां आ कर गिर रही हैं।

सोशल मीडिया पर आज कविता, कहानी, निबंध, उपन्यास, संस्मरण, डायरी, यात्रा-वृत आदि साहित्यिक विधाओं के दर्जनों पेज हैं, जहां हरदिन नये-नये रचनाकारों के द्वारा नई-नई रचनाएँ अपलोड होती रहती हैं। सोशल मीडिया पर अब तो साहित्यिक गोष्ठियों के वीडियो और ऑडियो भी साहित्य प्रेमी के लिए एक क्लिक पर उपलब्ध है। आज यूट्यूब एक ऐसा हथियार है जो अपार ज्ञान का भंडार है। आज प्रमुख कवियों की कविताओं के पाठ से लेकर बड़े-बड़े विचारक के विचार वीडियो और ऑडियो रूप में साहित्य प्रेमी के लिए उपलब्ध है। आज हर कोई अपनी साहित्यिक मौलिकता को किसी भी रूप में यूट्यूब के माध्यम से पूरी दुनिया के सामने रख सकता है। सोशल मीडिया पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ने साहित्य लेखन को भी बढ़ावा दिया है। आज साहित्य में तात्कालिकता है। समाज में घटित किसी भी घटना पर पल भर में ही वाद-विवाद, क्रिया-प्रतिकृया सबसे पहले सोशल मीडिया पर ही देखने को मिलती है। आज सोशल मीडिया की गति इतनी तीव्र है कि मुख्यधारा का मीडिया भी सोशल मीडिया को फॉलो कर रहा है। आज टीवी, रेडियो, अखबार आदि में किसी घटना की खबर आने से पहले वह सोशल मीडिया पर वायरल हो जाती है। अब मुख्य धारा की मीडिया में बहुतायत खबड़ें सोशल मीडिया से जुड़ी होती हैं या सोशल मीडिया से ली गयी होती हैं। अगर बात की जाए सन् 2011 ई. की जब अन्ना का आंदोलन चल रहा था, तब सोशल मीडिया पर जो लेखन हो रहा था, वह भ्रष्टाचार केन्द्रित तत्कालीन परिस्थितियों के लिए हुए था। उस समय तात्कालिक व्यवस्था और सत्ता के प्रति एक रोष था, जो सोशल मीडिया पर यथा- कविता, आलोचना, व्यंग्य, आलोचना तथा अन्य गद्य, पद्द लेखन के रूप में हमारे सामने आ रहा था। उसी प्रकार 2012 ई. में हुए दिल्ली दुष्कर्म, कांग्रेस सरकार का भ्रष्टाचार, सन् 2014 ई. का चुनाव और 2016 में नोटबंदी और आज कोरोना महामारी जैसे मुद्दों/समस्याओं पर लेखन सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों पर हो रहे हैं/होते रहे हैं। यहाँ साहित्यिक रूप इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि इन घटनाओं के बाद सोशल मीडिया पर किए जाने वाले कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना तथा अन्य साहित्यिक विधाओं के लेखन में ये घटनाएँ ही प्रमुखता लिए रही हैं।

जिस प्रकार पत्रकारिता जल्दबाजी में लिखा गया इतिहास होता है, उसी प्रकार सोशल साईट्स पर लिखा गया लेखन पत्रकारिता और साहित्य दोनों का ही सम्मिलित रूप होता है। दरअसल आज का पाठक धीरे-धीरे लेखक और आलोचक बन रहा है। आज सोशल मीडिया ने उन हजारों युवा लेखकों का सपना साकार किया है, जिनकी वर्षों से यह इच्छा रही है कि उनकी रचनाएँ भी साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित हों और उनकी लेखनी के भी पाठक हों, उनकी भी रचनाएँ लोग पढ़ें। वे जो लिखते हैं उसकी भी कोई समीक्षा और आलोचना करे। आज हिन्दी ही नहीं लगभग सभी भारतीय भाषाओं की सैकड़ों ई-पत्रिकाएँ उन हजारों लेखकों को यह मौका दे रही हैं, जो अपनी साहित्यिक रचनात्मकता को अभिव्यक्त नहीं कर पा रहे थें। आज सोशल मीडिया ने उन्हें भी यह मौका दिया है। आज ऑफलाइन से ज्यादा ऑनलाइन पत्रिकाएँ पढ़ी जा रही हैं। कारण साफ है, यहाँ न तो कोई समय की पाबंदी है और न ही पैसों से खरीदने की। साहित्य का पाठक, विद्यार्थी, शोधार्थी, शिक्षक सभी सोशल मीडिया पर लेखन और अध्ययन कर रहे हैं। आज सोशल मीडिया पर युवा साहित्यकारों की बाढ़ सी आ गई है। आज सोशल मीडिया पर गंभीर साहित्य लेखन के साथ-साथ साहित्य का प्रसार भी वैश्विक स्तर पर हो रहा है। सोशल मीडिया ने साहित्य का बाजारीकरण भी करने का कार्य किया है। आज बाजारवाद के मूल मंत्र 'जो दिखता है वही बिकता है'

को साहित्यकार भी अपनाने लगे हैं। सोशल मीडिया पर आज लेखक, साहित्यकार अपनी रचनाओं का जोर-शोर से प्रचार करता है। रचना को पाठक कैसे लेता है यह अलग मुद्दा है परंतु बाज़ार के दबाब में लेखक आज अपनी रचनाओं को सोशल मीडिया पर शेयर, अपलोड और टैग करता है।

सोशल मीडिया पर किसी भी साहित्यिक गतिविधि की जानकारी पलक झपकते ही दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने में पहुँच जाती है। आज अमेरिका में लिखी हिन्दी कहानियाँ भारत में बैठ कर पढ़ी जाती हैं तो वहीं भारत में लिखी कहानियाँ अमेरिका में। इंग्लैंड में बैठकर लिखे तेजेंदर शर्मा की कहानी 'दीवार में रास्ता है' को भारत में बैठा कहानी प्रेमी पाठ कर रहा है। न्यूजीलैंड से निकलने वाली भारत दर्शन पत्रिका का अरुणाचल के एक छोटे से गाँव में पाठ किया जा सकता है। आज बड़ी भाषा हो या छोटी सभी भाषाओं के साहित्यिक संस्थान हैं, उन सभी के अपने-अपने वेबसाइट हैं, जहां सभी साहित्यिक गतिविधिओं की जानकारी साहित्य प्रेमी को एक क्लिक पर मिल जाती है। आज साहित्य अकादमी जैसी देश के अन्य राज्यों में भी भाषा और साहित्य संस्थान हैं जहां लगभग सभी साहित्यिक गोष्ठियों और गतिविधियों का प्रिंट, वीडियो और ऑडियो क्लिप उनके वेबसाइट पर उपलब्ध/अपलोड होते हैं। आज साहित्य अकादमी और ऐसी अन्य संस्थाएं अपने साहित्यिक कार्यक्रमों का लाइव प्रसारण करती हैं। घर बैठे साहित्य प्रेमी इंटरनेट के माध्यम से उस प्रसारण को देख सकता है। साहित्य अकादमी की सभी संगोष्ठियों, अकादमिक कार्यक्रमों, वार्षिक कार्यक्रम 'साहित्योत्सव' जैसे आयोजन साहित्य अकादमी के साईट पर लाइव प्रसारित किए जाते हैं। लाखों किताबों के करोड़ों पन्ने अब इंटरनेट पर अपलोड हो कर सुरक्षित रूप में अमर हैं। इंटरनेट पर किसी भी कृति की पाण्डुलिपि को विलुप्त होनी की संभावना न के बराबर है।

21वीं सदी में साहित्य विस्तृत हुआ है। आज किसी एक स्थान तक ही यह सीमित नहीं है। बनारस, इलाहाबाद, पटना, दिल्ली आदि ही इसके केंद्र नहीं हैं बल्कि अब तो यह शिलांग में बैठकर साहित्य लिखा जा रहा है तो वहीं सिडनी में बैठकर पढ़ा जा रहा है। आज संस्कृति और भाषा के साथ-साथ साहित्य भी वैश्विक हो गया है। आज साहित्य किसी की बपौती नहीं है, हर कोई लिख और पढ़ सकता है। आज सोशल मीडिया पर लिखी गयी कविताएँ और कहानियाँ साहित्य जगत में चर्चा का विषय बन रही हैं। अब सोशल मीडिया की रचनाओं को संकलित भी किया जाने लगा है। फेसबुक से कविताएँ, ब्लॉग के लेख, और साहित्य डॉट कॉम के गद्य लेखन पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो रहे हैं। 'वेब मीडिया' एक ऐसा वेब पोर्टल है, जहां हिन्दी की अनेकों प्रमुख पत्रिकाओं का इंटरनेट वर्जन उपलब्ध है साथ ही ऑनलाइन पत्रिकाएँ भी। सोशल मीडिया पर उपस्थित साहित्य, जबतक लेखक न चाहे तबतक अमर है। यहाँ साहित्य आँधी-तूफान, सर्दी, गर्मी या किसी भी प्रकृतिक आपदा से नष्ट नहीं होने वाला है। आज साहित्य का एक-एक शब्द अजर है, भले ही पाठक के मस्तिष्क में स्थान न बना पाये। ऐसा नहीं है कि विज्ञान ने जीतने तकनीक दिये हैं, वे सभी मानव मात्र के कल्याण के लिए ही हैं या फिर उनमें कोई खामियाँ नहीं हैं। आज इंटरनेट रूपी साहित्य अर्थात् सोशल मीडिया के साहित्य की अपनी कुछ सीमाएं भी हैं। ये सीमाएं साहित्य, लेखक और पाठक तीनों के लिए है। साहित्यिक स्तर के लिहाज से न्यू मीडिया का साहित्य परंपरागत साहित्य से कमजोर हो रहा है। आज सोशल मीडिया, साहित्य से साहित्यिकता को गायब करता जा रहा है साथ ही भाषा की शुद्धता को भी दूषित कर रहा है। आज साहित्य की भाषा पर बोल-चाल की भाषा का प्रभाव बहुत अधिक परिलक्षित हो रहा है। आज का पाठक लेखक बनने की होड़ में शामिल होना चाहता है, वहाँ वह पल भर में कुछ भी लिख कर अधिक से अधिक लाइक और कमेंट्स के लिए आँखें गड़ाएँ रहता है। ऐसा नहीं है कि सोशल मीडिया पर लिखा गया या लिखा जा रहा सब लेखन साहित्य की कोटी में ही आता है। आज के नये-नये युवा लेखक अपनी संवेदनाओं को अपने तरीके से सोशल मीडिया पर अभिव्यक्त कर रहे हैं। आज भाषा उनके लिए कोई मायने नहीं रखती, उन्हें तो अपनी बात रखने से मतलब है। सोशल मीडिया की भाषा मिश्रित भाषा है, उसमें मातृ भाषा से लेकर अँग्रेजी तक की गूंज हैं। आज के युवा वर्ग की जो भाषा सोशल मीडिया पर प्रयोग की जा रही है वह बाजार की भाषा, विज्ञापन की भाषा और फिल्म की भाषा का प्रभाव लिए हुए है। फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप्प और चैटिंग की भाषा, सोशल मीडिया के साहित्य की भाषा बन रही है। समय के साथ भाषा भी बदलती है परंतु

साहित्य की भाषा की बदलने की प्रक्रिया बहुत ही धीमी होती है। 21वीं सदी में बाजार जितनी तेजी से संस्कृति को बदल रहा है उतनी ही तेजी से भाषा को भी। सोशल मीडिया आज एक लत की तरह है, जिसे भी इसकी आदत लग जाती है फिर बहुत मुश्किल से ही छुट पाती है। "सोशल नेटवर्किंग साइटें नई पीढ़ी के लोगों को जोड़ने का अच्छा जरिया भले ही हों, मगर इसके कई नुकसान भी झेलने पड़ रहे हैं। इंडस्ट्री चैंबर एसोचैम ने नई दिल्ली, बैंगलुरु, चेन्नई, इंदौर, मुंबई, पुणे, चंडीगढ़ और कानपुर में करीब 4000 कॉर्पोरेट कर्मचारियों द्वारा दिये गए जवाब पर आधारिता अपने एक नई स्टडी के आधार पर बताया है कि कॉर्पोरेट सेक्टर के कर्मचारी दफ्तरों में हर रोज औसतन एक घंटा वक्त ट्विटर और फेसबुक जैसी सोशल नेटवर्किंग साइटों पर बर्बाद कर रहे हैं, जिससे उनकी करीब साढ़े बारह फीसदी प्रोडक्टिविटी यानि उत्पादकता पर खासा असर पड़ रहा है। इसी कारण कई आईटी कंपनियों ने इन साइटों का इस्तेमाल बंद करने के लिए अपने सिस्टम में सॉफ्टवेयर लगाया है।"[xii]

सोशल मीडिया से जुड़ा साहित्य प्रेमी, सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म पर अपनी रचनात्मकता को जोड़-शोर से पेश कर रहा है। आज जो चुटकुले लिखता है वो भी सोशल मीडिया पर खुद को लेखक समझ बैठता है। आज फेसबुक का अधिकांश यूजर अपने आप को लेखक, कवि और आलोचक से कम नहीं समझता है। कुछ भी लिख कर अपने फ्रेंड्स के बीच में खुद की धाक बड़े लेखक के रूप में जमाना चाहता है। आज किसी भी घटना की जानकारी मुख्यधारा की मीडिया से पहले सोशल मीडिया पर मिलती है। सोशल मीडिया पर किसी भी घटना की जानकारी क्षण भर में ही मिल जाती है। सोशल मीडिया ने सभी को पत्रकार और साहित्यकार बना दिया है। न्यू मीडिया के दौर में लेखक के अंदर सब्र नहीं है, उनके लेखन में क्षणिकता परिलक्षित होती है। आज विश्व के कोने-कोने में बैठे साहित्य प्रेमी अपने साहित्यिक प्रेम का इज़हार इंटरनेट के माध्यम से करते हैं।

निष्कर्ष (Conclusion)

आज का पाठक साहित्य और साहित्येतर लेखन में फर्क नहीं कर पा रहा है। उसके पास साहित्यिक लेखन/रचना का अथाह भंडार है। उसके सामने यह चुनौती है कि क्या पढ़े और क्या न पढ़े! साथ ही आज के लेखन में जो मिश्रण है उससे पाठक यह चयन नहीं कर पा रहा कि कौन सा लेखन साहित्यिक है और कौन गैर साहित्यिक। यहाँ एक वेबसाइट पर जाने के बाद अनेकों लिंक से जुड़ के पाठक मूल विषय से कहीं और भटक जाता है। आज जिस प्रकार से इंटरनेट पर अभिव्यक्ति की खुली आजादी है उसमें हर कोई कुछ भी लिख कर शामिल होना चाहता है। आज एक दूसरे में होड़ मची हुई है कि कौन कितना लिखता है, कौन कितना चर्चित होता है, कौन कितना लाइक और कमेन्ट पता है। आज सोशल मीडिया का लेखन पैसे कमाने का जरिया भी हो गया है। पेज के लाइक और हिट्स से विज्ञापन मिलते हैं, तो वहीं वीडियो के जीतने अधिक व्यू होते हैं, विज्ञापन दाता उसी अनुपात में पैसे भी देते हैं। सोशल मीडिया ने कट, कॉपी, पेस्ट की प्रवृति को बढ़ावा दिया है। परंतु समय के साथ इसमें भी बदलाव अवश्य आएगा। अभी सोशल मीडिया अपने युवा अवस्था में है, समय के साथ-साथ इसमें प्रौढ़ता आएगी। नई चीजें सभी को शुरू में आकर्षित करती हैं परंतु समय के साथ उसमें बदलाव लाज़मी है।

संदर्भ

[i] विकास की अवधारणा और सोशल मीडिया, https://hindivivek.org/1021, 8 नवंबर, 12:44 pm
[ii] https://www.snhu.edu/about-us/newsroom/2020/02/what-is-new-media, 9 नवंबर, 12:40 pm
[iii] विश्व मीडिया बाजार, रट्टू, कृष्ण कुमार, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2006 ई., पृष्ठ-16
[iv] विकास की अवधारणा और सोशल मीडिया, https://hindivivek.org/1021, 9 नवंबर, 4:10 am
[v] मीडिया का हालिया तकनीकी नियतिवाद, प्रांजल धर, वर्तमान साहित्य, अक्टूबर, 2013, पृष्ठ-69
[vi] विकास की अवधारणा और सोशल मीडिया, https://hindivivek.org/1021, 9 नवंबर, 6:10 pm

[vii] न्यू मीडिया में हिंदी साहित्य की उभरती प्रवृतियाँ, शैलेश, https://vishwahindijan.blogspot.com/2017/02/blog-post_1.html, 10 नवंबर, 12:01 pm

[viii] न्यू मीडिया में हिन्दी साहित्य की उभरती प्रवृतियाँ, शैलेश, https://vishwahindijan.blogspot.com/2017/02/blog-post_1.html, 10 नवंबर, 12:10 pm

[ix] https://bitmesra.ac.in/naps/reviving-literature/ , 13 नवंबर, 12:07 pm

[x] चतुर्वेदी, जगदीश्वर, मीडिया समग्र-4, जनमध्यम और मासकल्चर, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2013, पृष्ठ-111-112

[xi] https://hindi.webdunia.com/coronavirus/literature-and-social-media-120052500085_1.html , 14 नवंबर, 4:05 pm

[xii] विकास की अवधारणा और सोशल मीडिया, https://hindivivek.org/1021, 17 नवंबर, 12:51 am